P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतवर्ष में पब्लिक स्कूल परीक्षा के विकास की ऐतिहासिक दृष्टि

कृष्ण चन्द गौड़
अध्यक्ष,
शिक्षा संकाय,
डी0पी0बी0एस0(पी0जी0)कॉलेज
अनूपशहर, बुलन्दशहर
भारत

सारांश

पब्लिक स्कूल एक साधारण सन्दर्भ में वे स्कूल है जो उच्च आय वर्ग के छात्र से सम्बन्धित है, जिनका शिक्षा माध्यम अंग्रेजी भाषा है, जिनके द्वारा वर्ग चेतना का भाव जागृत किया जाता है और उनमें शिक्षा प्राप्त करने वाला छात्र समाज में एक विशिष्ट वर्ग बनाता है, इसके अतिरिक्त एक ऐसा स्कूल जिसके द्वारा अमीर वर्ग अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा प्रदान करना चाहता है, जिससे वे आगे चलकर समाज में एक अभिजात्य वर्ग का निर्माण कर सकें।

मुख्य शब्द : सामान्यतः, सर्वांगीण, आत्मनिर्भर, प्रणालियाँ, दार्शनिक।

प्रस्तावना

पूजीपतियों द्वारा अधिक शुल्क लेने वाले सरकारी हस्तक्षेप से युक्त विशिष्ट वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा देने वाले अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य ढंग की शिक्षा देने वाले स्कूल पब्लिक स्कूल।

परिभाषा सिडनी स्मिथ के अनुसार

''पब्लिक स्कूल से हमारा अभिप्राय शिक्षा के उस परम्परागत साधन सम्पन्न स्थान से है। जहां कुलीन व्यक्तियों के बालक 8 से 9 वर्ष की आयु से नियमित रूप से रहते हुए शिक्षा प्राप्त कर सकें।''

प्रो0 हुमायूँ कबीर के अनुसार

''सामान्यतः व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा स्थापित किए गए पब्लिक स्कूल प्रायः आवासीय होते हैं और जनता के अधिक सम्पन्न लोगों से अपने लिए विद्यार्थी प्राप्त करते हैं। अधिक साधनों तथा स्वतंत्रता के कारण ये विद्यालय नेतृत्व के विकास पर अधिक बल देते हैं और अपने विद्यार्थियों के लिए अधिकतम सुविधा देने में समर्थ होते हैं।

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकलता हैं–

1. पब्लिक स्कूल में कुलीन या साधन सम्पन्न वर्ग के बच्चे पढ़ते हैं।
2. ये स्कूल आवासीय होते हैं।
3. संचालन एवं प्रशासनिक दृष्टि से ये विद्यालय पूर्ण स्वतंत्र होते हैं।
4. ये विद्यालय छात्रों के लिए अधिकतम सुविधाएं जुटाते हैं।
5. ये विद्यालय नेतृत्व के विकास पर अधिक बल देते हैं।

पब्लिक स्कूलों का ऐतिहासिक अवलोकन

अगर पब्लिक स्कूलों में ऐतिहासिक पक्ष का अवलोकन करें तो ज्ञान होगा कि भारत में ये स्कूल सर्वप्रथम राज्य परिवारों के लिए खोले गये। सबसे पुराना राजकुमार कालिज (राजकोट) में 1870 खोला गया, इसी प्रकार के अनेक स्कूल 19 बीं शताब्दी के अन्त तक खुल गये जिनमें राजकुमार कालेज रायपुर, कालविन कालेज में राज परिवारों के बच्चे शिक्षा ग्रहण किया करते थे। दूसरी प्रकार के पब्लिक स्कूल केवल यूरोपीय बच्चों के हेतु थे, जैसे पब्लिक स्कूल देहरादून, कान्वेन्ट स्कूल शिमला, सेंटपाल स्कूल दार्जिलिंग। तीसरे प्रकार के स्कूल सैनिकों के लिए खोले गये, लारेंस स्कूल एवं किंग जार्ज पंचम स्कूल इसी प्रकार के विद्यालय हैं।

भारतवर्ष में कुछ प्रसिद्ध पब्लिक स्कूल

1. सिंधिया स्कूल, ग्वालियर 2. डेली स्कूल, इन्दौर 3. बिरला विद्यामन्दिर, नैनीताल 4. राजकुमार कालेज, राजकोट 5. राजकुमार कालेज, रायपुर 6. इन स्कूल देहरादून 7. मार्डन स्कूल, दिल्ली 8. यादवेन्द्र पब्लिक स्कूल, पटियाला 9. बिरला पब्लिक स्कूल, पिलानी 10. मेयो कालेज, अजमेर 11. साईल पब्लिक स्कूल, बीकानेर 12. महारानी गायत्री देवी गर्ल्स पब्लिक स्कूल, जयपुर 13. हैदराबाद पब्लिक स्कूल, हैदराबाद 14. शिवाजी प्रिपरेटरी मिलिटरी स्कूल, पूना 15. लॉरेन्स स्कूल, लावडेला 16. विकास विद्यालय, रांची 17. लॉरेन्स स्कूल, सनवार।

पब्लिक स्कूलों का सामान्य स्वरूप

भारत में पब्लिक स्कूलों की नियमावली के अनुसार प्रत्येक छात्र, छात्रा को छात्रावास में रहना आवश्यक होता है। सप्ताह के 6 दिन प्रतिदिन 6 घण्टे के हिसाब से पढ़ाई होती है। और शेष समय छात्रावास अतिरिक्त पाठ्य सहगामी, सावासिक व्यवस्था, छात्रावास में वार्डन के नियन्त्रण में रहना आवश्यक, छात्रावास के नियमों का पालन आवश्यक। स्कूल में सभी सुविधाएँ उपलब्ध, शिक्षकों का सभी क्रियाओं पर नियन्त्रण, शिक्षा स्तर ऊँचा, जीवन नियमित परन्तु विलासपूर्ण शुल्क ऊँचा लगभग 6 से 7 हजार रूपये प्रतिवर्ष सरकार का हस्तक्षेप नहीं।

भारत पब्लिक स्कूलों की विशेषताएँ

कुछ लोग पब्लिक स्कूलों की बहुत प्रशंसा करते हैं। उनके अनुसार पब्लिक स्कूल अनुशासन, चरित्र–गठन, सहकारिता, कर्त्तव्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व वहन करने और नेतृत्व की शिक्षा देने में सर्वोत्तम शिक्षा केन्द्र हैं। इन स्कूलों में छात्रों के पूर्ण व्यक्तित्व का विकास किया जाता है, केवल उन्हें परीक्षा के लिए तैयार नहीं किया जाता। वहाँ सभी शिक्षण– सुविधाएं और उपकरण उपलब्ध होते हैं। अध्यापक और छात्र कोई भी किसी कार्य में कठिनाई का अनुभव नहीं करता। वहाँ हमारे स्कूलों की भाँति कोई दुर्व्यवस्था और अभाव नहीं हैं।

पब्लिक स्कूलों की वर्तमान स्थिति (अवगुण)

लोकतन्त्र विरोधी, अधिक खर्चीले, विलासी जीवन को प्रोत्साहन, शोषकों का वर्ग तैयार, जन–सेवक नहीं, शैक्षिक अवसरों की समानता के सिद्धान्त के विरूद्ध, अभारतीय संस्कृति की अवहेलना।

पब्लिक स्कूलों की शैक्षिक पद्धति

इन विद्यालयों की शिक्षण पद्धति सामान्य विद्यालयों से भिन्न है। अध्यापक प्रशिक्षण कार्यो में रूचि लेते हैं। बालकों के सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान दिया जाता है। बालकों में अनुशासन एवं अच्छी आदतें डालने का प्रयास किया जाता है। पब्लिक स्कूलों में अच्छे प्रतिभावान छात्र शिक्षा प्राप्त करके निकालते है। भारत में पदासीन एवं उच्चवर्गीय महान विभूतियाँ इन्ही स्कूलों की देन है।

भारत वर्ष में पब्लिक परीक्षा प्रणाली की स्थिति

आज यह स्वीकार करना होगा कि उपर्युक्त विशेषताओं को ग्रहण करने वाले स्कूल बहुत कम हैं, अधिकतर स्कूलों में केवल यूनिफॉर्म और अंग्रजी की पढ़ाई पर ही जोर दिया जाता है, वहाँ पाश्चात्य ढंग से ही शिक्षा दी जाती है। फीस तो ऊँची है ही पर उसके साथ एक 'डोनेशन' की प्रथा भी है। नवधनाढ्य अभिभावकों के बच्चे ही इनमें शिक्षा ग्रहण करते है। छात्रों की योग्यता का मूल्याँकन उनके आर्थिक आधार पर ही नहीं आँका जाता है, अपितु उन्हें परीक्षा में अच्छे अंक भी दिये जाते हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति से इन स्कूलों का कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ पढ़ने वाला बच्चा अंग्रेजी का कितना भी अच्छा आचरण तो कर लेता है किन्तु उसमें अपने गरीब देशवासियों के प्रति उपेक्षा और नफरत का भाव भी पैदा हो जाता है। आम धारणा है कि इन स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने से समाज में एक विशिष्ट रूतवा मिलता है।

पब्लिक स्कूल परीक्षा प्रणाली के निमित्त सुझाव

पब्लिक स्कूलों की शिक्षा प्रणाली के लिए निम्नलिखित सुझाव आपेक्षितहैं।

प्रत्येक माह में प्रत्येक विषय की परीक्षा ली जाये जिसके अन्तर्गत लिखित परीक्षा के साथ–साथ मौखिक परीक्षा का भी समावेश होना चाहिये। जैसे कोई विषय 25 अंक का है तो उसमे 20 अंक का लिखित परीक्षा तथा 5 अंक का मौखिक होना चाहिए। इस प्रक्रिया को अनिवार्य रूप से अपनाया जाय। और षट्मासिक एवं वार्षिक परीक्षा में भी प्रयोग किया जाए। इसके साथ–साथ पूरे वर्ष का ग्रह कार्य एवं कक्षा कार्य का भी मूल्याँकन किया जाये। यदि ग्रेडिंग भी की जाती है तो उसके साथ–साथ अंको को भी लिखा जाए।

निष्कर्ष

आज हमारे देश में विज्ञान की प्रमुखता है छात्र को एकांगी न होकर बहुमुखी प्रतिभा होना चाहिए, जिसके लिए छात्र को व्यवहारिक ज्ञान कराया जाना चाहिए। जिससे की आत्मनिर्भर होकर अपने जीवकोपार्जन में समर्थ हो सकें। यदि मूल्याँकन में लिखित परीक्षा के साथ–साथ मौखिक परीक्षा का समावेश किया जायेगा तो निश्चित रूप से छात्रों का लाभ होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

चौबे एस0पी0– तुलनात्मक शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

जायसवाल, सीताराम, तुलनात्मक शिक्षा हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ 1970

पाण्डेय रामसकल आधुनिक शिक्षा का विकास, मेट्रोपोलीटन बुक कम्पनी (प्रा0) लि0 दिल्ली, 1963

श्रीवास्तव, आर0एस0– तुलनात्मक शिक्षा, इण्डिया बुक हाउस, हास्पीटल रोड, आगरा 1963

मथुरा, डा0 एम0एस0– विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, रस्तोगी एण्ड कम्पनी, सुभाष बाजार मेरठ

गौड़ डा0 के सी0 एवं अन्य, शैक्षिक प्रवन्ध एवं गौड़ विद्यालय संगठन अरिहत शिक्षा प्रकाशन जयपुर, राजस्थान/वर्मा

डा0 जी0एस0– भारत में शिक्षा का विकास, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ

अग्रवाल, संतोष कुमारी, एवं गर्ग के0– चार देशों की शिक्षा प्रणालियाँ– माडर्न पब्शिर्स 729, पी0एल0 शर्मा रोड मेरठ।

बलिया, डा0 जे0एस0– शिक्षा के सिद्धान्त तथा विधियापाल पब्लिशर्स एन0एन011, गोपाल नगर जालन्धर (पंजाब)

प्रो0 रमन बिहारी लाल– शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त रस्तोगी पब्लिकेशन्स, गंगोत्री शिवाजी रोड मेरठ–250002

डा0 एम0के0 सिंह– उदीयमान भारतीय समाज के शिक्षक – इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।